

2) ड्रमलिन / हिम नदीद (DRUMLINS) → अंतिम हिमोढ़ से पहले बर्फ के साथ लार एवं स्थानीय बहाव से रीढ़ों के ढेर के रूप में जमा हो जाते हैं। ये दूर से उठती नाव एवं अंडे जैसे प्रतीत होते हैं। इनका आगे का ढाल तेज और पीछे का ढाल धीमा होता है। आकार विस्तार में ये एक समान नहीं होते। ऊंचाई हिम नदीद की 6 m - 36 m के बीच रहती है। कभी-कभी इनकी ऊंचाई शीत-शीतोष्ण प्रदेशों में 100 m से अधिक तक भी पाई जाती है। ये प्रायः एक साथ सैकड़ों की संख्या में सैकड़ों वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले रहते हैं। ऐसी ड्रमलिन 5-3 km के मध्य तक लंबी पाई जाती हैं। इन प्रदेशों की भूमि फलदली होती है। ऐसे क्षेत्रों को 'अण्डों की टोकरी का धरातल' भी कहते हैं। इनका निर्माण हिमानी के अंतिम भाग के हिम घाटित व तापमान के घटने-बढ़ने से, आगे-पीछे हटने से होता है अर्थात् अंतिम हिमोढ़ के आगे-पीछे बलने व मिटने रहने से होता है। इसके निर्माण में पिछले दूर बर्फ से प्राप्त पानी का भी विशेष हाथ रहता है। अतः इसे हिम नदीद (हिम + नदी द्वारा के जमाव) कहते हैं। हिम नदीद संयुक्त राज्य अमेरिका में अधिक मिलते हैं।

हिमनद का मार्ग



ड्रमलिन

3) सुदूर फैले बड़े शिलाखंड → कभी-कभी बड़ी घाटी या (Erratic blocks) महाद्वीपीय हिमानी अपने साथ

विशाल आकार के सैकड़ों टन वजन का विशाल पत्थर मैदानी भाग तक बर्फ के साथ खींचकर ले जाती है। ऐसे विशाल ब्लॉक या शिलाखंड मध्य व उत्तरी यूरोप, महान गोल (उत्तरी अमेरिका) के उत्तरी भाग एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में पाए जाते हैं। इन्हें 'विस्थापित शिलाखंड' भी कहते हैं, क्योंकि ये अपने जन्म स्थान से सैकड़ों किलोमीटर दूर तक बहाए जाते हैं।

4) विषम स्थिति के हिमोढ़ → कभी-कभी हिमानी की घाटी में (Patched block moraines) हिम खाम होने के बाद घाटी के किनारों एवं ढालों पर विचित्र अवस्था में अलग-अलग आकृतियों में हिमोढ़ व शिलाखंड एकत्रित हो जाते हैं। कभी ये बड़े ढेर की तरह, कभी घोंसले की भाँति तो कभी बड़े उभार या दौटी-दौटी ढेरियों में फुन्सी पत्थर (Pocking stones) की तरह आकार में जमा होते रहते हैं। लेब्लेण्ड प्रदेश (उत्तरी यूरोप) एवं कनाडा के लेब्लेण्ड प्रदेश में ऐसी जमाव पाए जाते हैं।



हिम प्रदेश में लुढ़कता हुआ शिलाखंड